Dr Vandana Suman
Associate professor
Dept of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

M. A III Sem - CC - 14
Philosophy of Religion - II

Paper - XIV

1.

"रहस्यवाद" (Mysticism)

गुप्त ज्ञान की अभिव्यक्ति ही रहस्यवाद है। परन्तु दार्शनिकों का कहना है कि रहस्यवाद गुप्त ज्ञान का प्रकाश ही नहीं, वरन् गूढ़ अनुभूति का प्रकाश है। ज्ञान अनुभूति (अत्यन्त व्यापक) से अलग नहीं परन्तु अनुभूति और व्यक्त दोनों है। अनुभूति अभिव्यक्त अनुभूति हुआ करती है। ज्ञान केवल व्यक्त अनुभूति है क्योंकि यह भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। अव्यक्त आन्तरिक अनुभूति को व्यक्त करने में भाषा असमर्थ है। अतः दर्शन के क्षेत्र में रहस्यवाद भाषा की असमर्थता बतलाते हुए आन्तरिक अनुभूति की गहराई तक पहुँचने का प्रयास करता है। रहस्यवाद को अंग्रेजी में मिस्टीसिज्म (Mysticism) कहते हैं। यह ग्रीक शब्द यूनानी भाषा के Muo क्रिया से बना है, जो चुप रहने के अर्थ को बतलाता है। यह मौन रहना या गूँगा (Mum) होना, अनुभूति की चुप्पी साधना है। जो अनुभूति की गहराई तक पहुँच जाता है, वह मौन साध लेता है। कुछ लोगों का कहना है कि अंग्रेजी की 'मिस्टिक' शब्द की उत्पत्ति ग्रीक 'मिस्टीस' या 'मिस्टेस' से हुई जिसका अर्थ किसी सुयोग्य गुरु से जीवन मरण के गूढ़ तत्वों का ज्ञान प्राप्त करना है। गूढ़ ज्ञान रहस्य है और इसका उद्घाटन ही रहस्यवाद है। कुछ लोग रहस्यवाद को जादू-टोनावाद (ओकाल्टिज्म) समझते हैं, कुछ लोग इसे प्रतीकवाद (सिम्बोलिज्म) भी समझते हैं, परन्तु रहस्यवाद

सकती भिन्न है। रहस्यवाद तो उत्पन्न गुह्य ज्ञान है जिसकी शाब्दिक अभिव्यक्ति असंभव सी है। गीता में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को बतलाया है कि मुझ सर्वेश्वर ईश्वर को केवल यह गुह्य से भी गुह्य अत्यन्त गोपनीय-रहस्ययुक्त ज्ञान कहा है। सभी गुह्यों में अत्यन्त गुह्य-रहस्ययुक्त मेरे परम वचन तुम पुनः सुनो " तू मुझमें मनवाला (चित्तवाला) हो, मेरा भक्त (मेरा भजन करने वाला) हो और मेरा ही पूजन करनेवाला हो तथा मुझे ही नमस्कार कर। इस प्रकार करता हुआ; अर्थात मुझ वासुदेव में ही (अपने) समस्त साध्य, साधन और प्रयोजन को समर्पण करके तू मुझे ही प्राप्त होगा, मैं तुमसे सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ, क्योंकि तू मेरा प्रिय है। स्पष्ट है कि यह गोपनीय ज्ञान की ग्रन्थि का विमोचन है जिसके माध्यम से सत्य का साक्षात्कार होता है, तत्त्व के यथार्थ स्वरूप की उपलब्धि होती है। यह बौद्धिक ज्ञान नहीं वरन दिव्य या अलौकिक ज्ञान है। इस अलौकिक ज्ञान को अभिव्यक्त करने में वाणी असमर्थ है। इसीलिए जिन सन्तों या महात्माओं को इस रहस्य का सही पता चल जाता है वे मौन धारण करना चाहते हैं। इनका मौन गुप्त ज्ञान या रहस्य का सूचक है। महात्मा बुद्ध आध्यात्मिक (आत्मा-परमात्मा सम्बन्धी) प्रश्नों के उत्तर में मौन रह जाते थे। इसका कारण यह है कि महात्मा बुद्ध जानते थे कि रहस्य अनुभूति का विषय है, अभिव्यक्ति का नहीं। तात्पर्य यह है कि निर्विकल्प अनुभूति

2011
W T F S S
2 3 4 5 6
9 10 11 12 13
16 17 18 19 20
23 24 25 26 27
30 31

सविकल्प ज्ञान का विषय नहीं बन सकती। 'निर्वाण कैसा है' इस प्रश्न के उत्तर में भगवान ने बतलाया कि "यह समुद्र से भी गहरा, पर्वत से भी ऊँचा और मधु से भी मीठा है।" तात्पर्य यह है कि निर्वाण निर्विकल्प अनुभूति का विषय है। अतः उसका संकेत शब्दों से नहीं हो सकता।

रहस्यवाद में ज्ञान, क्रिया और भाव तीनों का समावेश है। वह तीन तत्वों को समान्तः महत्वपूर्ण मानते हैं। जैन इस का कहना है कि 'रहस्यवाद वह क्रियानुभूति है जिसमें ज्ञान, भाव और क्रिया का सुन्दर समन्वय है। इनका समन्वय ही रहस्यवाद को पूर्ण बनाता है।' दूसरे शब्दों में यह समग्र अनुभूति है जो अत्यन्त गूढ़ तथा रहस्यात्मक होती है।

~~रहस्यानुभूति की अनेक विशेषताएँ हैं जो इस प्रकार हैं~~

रहस्यवाद दो प्रकार का माना जाता है — (i) अन्तर्मुखी और (ii) बहिर्मुखी। पहले में मन में ही देखा जाता है, इसके लिए किसी इन्द्रियों की आवश्यकता नहीं। दूसरे में बाह्य संसार का निरीक्षण किया जाता है। इसके लिए इन्द्रिय की

आवश्यकता है, परन्तु दोनों का लक्ष्य एक है — परमसत्ता या पराशक्ति से तादात्म्य।

बहिर्मुखी रहस्यवाद में सम्पूर्ण विश्व में एक तत्व को देखने का प्रयास किया जाता है। विश्व की वस्तुएँ अनेक हैं, परन्तु इस अनेकता में एकता है, क्योंकि सभी एक ईश्वर की सृष्टि हैं।

सम्पूर्ण सृष्टि में एक ही ब्रह्म दिखता है। सृष्टि
सर्वेश्वरवाद का आधार है। इस दृष्टि से
रहस्यवाद को संकेतवाद का बीजरूप
होता है। इस रहस्यवाद के अनुसार रहस्यात्मक
अनुभूति का बौद्धिक वर्णन किया जाता है तथा इस
में ज्ञान की अभिव्यक्ति की जाती है
बाह्य इन्द्रियाँ सक्रिय रहती हैं। बाह्य विषयों के
अवलोकन तथा दृश्यों आदि की उपलब्धि में
इन्द्रियाँ सक्रिय रहती हैं। अतः यह इन्द्रियों के
माध्यम से अतीन्द्रिय का ज्ञान है। इस मत के
समर्थक स्पिनोजा, टैगोर, एमर्सन और आर.
एम. ब्लूक आदि हैं। इसके विपरीत अन्तर्मुखी
रहस्यवाद आत्मा और परमात्मा में तादात्म्य
का अनुभव है। इसमें जीव और शिव की
एकता पाई जाती है। इस एकता को न तो
व्याख्या की जा सकती है और न ही
वर्णन। यह आन्तरिक अनुभूति की
गहराई है। इस अनुभूति में साधक को
परम आनन्द और परम शान्ति का लाभ
होता है। इस रहस्यवाद में बाह्य जगत्
का ज्ञान नहीं रहता। साधक रहस्यात्मक
गहराई में खो सा जाता है और उसमें
जाता है। यह आन्तरिक दृष्टि से अद्वैत
का दर्शन है। इसे समाधि की अवस्था
कहते हैं जिसमें ज्ञाता और ज्ञेय का
अंतिम तत्व एक हो जाता है।

रहस्यवाद आत्मा और
परमात्मा के एकीकरण की अवस्था है।
यह एकीकरण एक अभिन्न सम्बन्ध
है। जिसमें दोनों में एकता का
अनुभव होता है। जिस प्रकार बूँद सागर

March 2011
T W T F S S
1 2 3 4 5 6
8 9 10 11 12 13
15 16 17 18 19 20
22 23 24 25 26 27
29 30 31

में विलय विलीन हो जाती है तथा साकार रूप ही हो जाती है। इसी प्रकार आत्मा और परमात्मा में अद्वैत स्थापित हो जाता है। एकता को दो प्रकार का बतलाया गया है — भावात्मक और अभावात्मक या निषेधात्मक। भावात्मक एकता में व्यक्ति सभी भूतों में भगवान का दर्शन करता है तथा भगवान को सभी भूतों को देखता है। इस प्रकार इसकी संकुचित दृष्टि विराट बन जाती है। अतः परमात्मा या परमात्मा के साक्षात्कार के लिए वह सृष्टि के कण-कण से अपना सम्बन्ध जोड़कर स्रष्टा का साक्षात्कार करता है। इसके विपरीत अभावात्मक या निषेधात्मक एकता में साधक केवल ईश्वर पर ही अपने ध्यान को केन्द्रित रखता है और ईश्वर से भिन्न सभी वस्तुओं का निषेध करता है। निषेध करते-करते वह अन्तिम ईश्वर तक पहुँच जाता है। यद्यपि दोनों प्रकार की विधियों का लक्ष्य परमात्मा को प्राप्त करना ही है। हम कह सकते हैं कि इन दोनों में मार्ग की केवल भिन्नता है लक्ष्य की भिन्नता नहीं। रहस्यवादी दोनों मार्गों से ईश्वर तक पहुँचता है। उपनिषद में इन दोनों मार्गों का वर्णन मिलता है।

प्राचीन यूनान के दर्शन और धर्म में रहस्यवाद दिखलायी पड़ता है, इनका ज्वलंत उदाहरण प्लेटो का दर्शन है। प्लेटो दार्शनिक और कवि दोनों थे। उनकी कविता

February 2011
M T W T F S S
7 8 9 10 11 12 13
14 15 16 17 18 19 20
21 22 ... 27
28

को जिन दार्शनिक तत्वों की ओर संकेत किये हैं, वह विश्व साहित्य में अद्वितीय हैं। और कलाकार होने के कारण इन्होंने ईश्वर को कलात्मक रूप प्रदान किया है, जो उनके रहस्यवाद का प्रतीक है। प्लेटो के पश्चात प्लोटिनस के दर्शन में रहस्यवाद का प्रभाव दिखलायी पड़ता है। उन्होंने बतलाया है कि आत्मा का परमात्मा से मिलना ही धर्म का मूल उद्देश्य है। इस मिलन के लिए साधन की आवश्यकता है। मनुष्य साधक बनकर ही परमात्मा प्राप्त कर सकता है। साधना की अन्तिम स्थिति समाधि है। इस अवस्था में मनुष्य को आन्तरिक प्रेरणा मिलती है। विश्व का मूल तत्व ईश्वर है जो सम्पूर्ण जगत को संचालित करता है। ईश्वर बौद्धिक ज्ञान का विषय नहीं, वरन् प्रत्यक्ष अनुभूति का विषय है।

ईसाई धर्म में रहस्यवाद का चरम उत्कर्ष दिखलायी पड़ता है। प्रायः मध्य युग के सन्त दार्शनिक रहस्यवाद की चर्चा करते हैं। सन्त दार्शनिकों में आगस्टाइन और एन्सेल्म का नाम प्रसिद्ध है। आगस्टाइन के 'City of God' और कनफेशन में रहस्यवाद की अभिव्यक्ति हुई है। इनके अनुसार ईश्वर से मानव का पुनर्मिलन ही धर्म की पराकाष्ठा है। यह ईश्वर की कृपा के बिना सम्भव नहीं। आधुनिक युग में स्पिनोजा को रहस्यवादी बतलाया जाता है। स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर ही सत्य है। यही स्रष्टा और सृष्टि की

April 2011

M	T	W	T	F	S	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

भोगि जाता है। इसे एकेश्वरवाद कहा जाता है। सिक्खों का ईश्वर निर्गुण है, परन्तु इस निर्गुण ईश्वर के प्रति प्रेम ही, उनका धर्म है। उनके अनुसार सद्गुरु की कृपा से ईश्वर की गणना को प्राप्त करना ही ईश्वर प्रेम है, यह रहस्यवादी प्रेम है। भारतीय दर्शन में उपनिषद् को रहस्यवाद का उदाहरण माना जाता है। उपनिषदों में आत्मा और परमात्मा, जीव और शिव, व्यष्टि और समष्टि, के एकत्व का प्रतिपादन किया गया है। यह अद्वैतवाद कहलाता है। मुण्डक उपनिषद् (२०८, २०६) में बतलाया गया है कि जिस प्रकार नदियाँ अपने नाम और रूप को छोड़ कर समुद्र में विलीन हो जाती हैं, उसी प्रकार विद्वान नाम और रूप से रहित होकर परमात्मा में विलीन हो जाता है। इसी उपनिषद में बतलाया गया है कि ब्रह्म को जाननेवाला ब्रह्म ही हो जाता है। योग-दर्शन को रहस्यवाद का सर्वोत्तम उदाहरण माना जाता है, इस दर्शन में बतलाया गया है कि साधक की अन्तिम अवस्था समाधि की प्राप्ति है। इस अवस्था में ज्ञाता ज्ञेय का भेद समाप्त हो जाता है। योगी इस अवस्था को प्राप्त कर परमात्मा का रूप ही बन जाता है। रहस्यवाद की अनेक विशेषताएँ हैं—

1. अनिर्वचनीयता — रहस्यानुभूति अनिर्वचनीय होती है। इसका रसास्वादन किया जा सकता है, परन्तु इसे अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता।

(2) बौद्धिकता — रहस्यवाद को अन्तःस्थ हृदय का अद्भुत भाव समझा जाता है परन्तु यह अचेतन भाव नहीं। यह ज्ञान की गहराई है जिसमें ज्ञाता और ज्ञेय की एकता का साक्षात ज्ञान होता है। इसकी बात यह है कि यदि यह अबौद्धिक हो तो अप्रामाणिक होगा परन्तु ऐसी बात नहीं। इसकी प्रामाणिकता अलौकिक है, यह सन्देह शून्य सत्य है।

(3) अस्थायित्व या क्षणिकता — रहस्यात्मक अनुभूति क्षणिक होती है हवा के झकोरे या समुद्र की लहरों के समान किसी विशेष क्षण में इसका उदय होता है तथा स्वर अन्त हो जाता है, परन्तु जिस क्षण में इसकी उत्पत्ति होती है, यह अत्यन्त तीव्र होती है, बाद में क्षीण होने लगती है। यह दिव्यानुभूत है, इसकी उत्पत्ति के समय एक विचित्र बेचैनी और कम्पन - चकन का अनुभव होता है।

(4) निष्क्रियता — इसकी उत्पत्ति के समय सभी भौतिक इन्द्रियाँ शिथिल पड़ जाती हैं, साधक किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है। पराशक्ति के वश में वह अपने को पराधीन सा अनुभव करता है, मन्त्र-मुग्ध हो किसी अज्ञात-स्वर को सुनने लगता है।

(5) ऐक्य का अनुभव — रहस्यानुभूति के समय उपासक और उपास्य के बीच का द्वैत समाप्त हो पूर्ण-अद्वैत या तादात्म्य का अनुभव होने लगता है। इस स्थिति को उत्पन्न होते ही उपासक को केवल उपास्य-देव ही दिखलाई देने लगते हैं। —

हममें तुममें खड्ग खम्भ में घट-घट व्यापी राम – कबीर,

सिया-राम मय सब जग जानी,
करहुँ प्रनाम जोरि जुग पानी' – तुलसीदास

और भगवान में सभी भूतों की स्थिति है, सभी भूतों में भगवान।

(6) परमानन्द का अनुभव – प्रेम रहस्यवाद की स्थिति की अनुभूति होती है, साधक परम-आनन्द का अनुभव करता है। आनन्द से विभोर हो वह एक प्रकार के उन्माद का अनुभव करने लगता है। इस आनन्द का शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। साधक नाचने-गाने लगता है, प्रलाप भी करने लगता है।

(7) जीवन में परिवर्तन – रहस्य की अनुभूति प्राप्त कर व्यक्ति का जीवन-क्रम परिवर्तित हो जाता है। अब साधक सुख-आह से बेचैन नहीं होता, एक विचित्र संसार में लीन सा खोया हुआ सा रहने लगता है। उसे सर्वत्र वही दिव्यानुभूति का दृश्य दिखलाई पड़ने लगता है, बाह्य जगत को वह अपने भीतर देखने लगता है।

06 Sunday

(8) नैतिक उत्कर्ष – रहस्यानुभूति को प्राप्त साधक का शरीर पूर्णतः पवित्र हो जाता है। देह-जन्य विकारों से मुक्त वह परम शान्ति का अनुभव करने लगता है। उसके जीवन में काम-क्रोध, राग-द्वेष, मान-माया आदि [illegible]

समाप्त हो जाते हैं। रहस्यवाद की विरुद्ध भी आलोचनाएँ भी की गयी हैं, जो इस प्रकार हैं:—

(1.) रहस्यवाद जीव और जगत की व्याख्या नहीं करता। यह तो एक अनुभव की स्थिति है। संसार की व्याख्या करना इसका कार्य नहीं है। आज के वैज्ञानिक युग में जो जीव और जगत की वैज्ञानिक व्याख्या नहीं करता उसे अवैज्ञानिक और असंगत समझा जाता है।

(2) रहस्यवाद को अबौद्धिक समझा जाता है। रहस्यवाद के पर इसी कारण समालोचकों का कहना है कि जो बुद्धि के पर है वह दर्शन का विषय नहीं बन सकता। रहस्यवाद बुद्धि का निषेध करता है। अतः हेगल का कहना है कि रहस्यवाद दर्शन का निषेध है।

(3.) रहस्यवाद का सम्बन्ध भावनाओं से है। भावनायें आत्मगत हुआ करती हैं वस्तुगत नहीं। यही कारण है कि रहस्यवाद को एक आत्मनिष्ठ अनुभूति के रूप में स्वीकार किया जाता है परन्तु इस अनुभूति में तो वस्तुनिष्ठता का पूर्ण अभाव रहता है। वस्तुनिष्ठ न होने के कारण इसकी प्रामाणिकता का संदेह बना रहता है। (आत्मगत भावनाओं की परीक्षा सम्भव नहीं।

(4). वैज्ञानिक दृष्टि से तो रहस्यवाद संशयवाद और अज्ञेयवाद को जन्म देता है। रहस्यात्मक अनुभूति अद्भुत चमत्कारपूर्ण होती है परन्तु यह स्पष्ट अनुभूति है। दूसरों के लिए सदैव संदेह की

मात्रा बनी रहती है। रहस्यवाद तर्क के एकान्तिक स्वरूप का बौद्धिक ज्ञान के प्रतिमानता है, जो अबौद्धिक है वह अवश्य ही अज्ञेय है।

(5) रहस्यात्मक अनुभूति को अनिर्वचनीय माना जाता है। वचन के द्वारा भाव की पूर्ण अभिव्यक्ति नहीं हो सकती। यदि यह वाणी का विषय नहीं तो यह शब्द और सिद्धान्त का रूप भी धारण नहीं कर सकता। अनिर्वचनीय अनुभव सर्वमान्य सिद्धान्त नहीं हो सकता।

(6) रहस्यवाद अनुभूति की गहराई है, जिस स्थिति में कभी उन्माद की अवस्था भी उत्पन्न हो जाती है। इसीलिए कुछ आलोचकों का कहना है कि यह विकृत मस्तिष्क का परिणाम है। कुछ असामान्य व्यक्ति ही इस अवस्था को प्राप्त कर सकते हैं।

(7) रहस्यात्मक अनुभूति निष्क्रियता उत्पन्न करती है। रहस्य का अनुभव करते समय साधक की इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती हैं। व्यक्ति निष्क्रिय होकर केवल परमशक्ति को चुनता है। रहस्य को प्राप्त करने के बाद सामाजिक कार्य और जीवन में उस व्यक्ति की कोई रुचि नहीं रह जाती है। वह समाज में जीते हुए भी नहीं जीता। अतः आलोचकों का कहना है कि समाज में यह अकर्मण्यता की स्थिति है। यह पलायनवादी प्रवृत्ति को उत्पन्न करता है।

जीवन की सांसारिकता का सामना नहीं कर सकते हैं वे ही रहस्यवाद की ओर से विभाग करना चाहते हैं।

(ब) रहस्यवाद के कारण समाज में अंधविश्वासों तथा अन्धविश्वासों का जन्म होता है। रहस्यवादी सिद्धान्तों की बातें बतलाकर लोगों में अन्धविश्वास उत्पन्न करते हैं। ऐसी जादू पर जादू टोना आदि अंधविश्वास धारणाओं को भी प्रोत्साहन मिलता है। इस प्रकार आलोचकों का कहना है कि रहस्यवाद मानव-विवेक का शत्रु है।

इन आक्षेपों के बावजूद भी रहस्यवाद का अपना महत्त्व है। दार्शनिक रहस्यवाद को धर्म का सारतत्त्व मानते हैं। यही कारण है कि संसार में सर्वोच्च धर्मों के संस्थापक रहस्यवादी ही होते रहे हैं। धर्म में ज्ञानात्मक, भावनात्मक, और क्रियात्मक तीनों तत्त्व विद्यमान रहते हैं। यही स्थिति रहस्यवाद की भी है। अतः रहस्यवाद तो धर्म का प्रभाव है। इसी के कारण धर्म की रक्षा होती है तथा धर्म का विकास होता है। रहस्यवाद के बिना धर्म निर्जीव और गतिहीन हो जायगा। रहस्यवादी अनुभूति के बिना तो धर्म केवल बाह्य आडम्बर और रूढ़िवाद ही रह जाता है। अतः यह धर्म के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसका महत्त्व शब्दों के पर है।